अफ्रीका में 7000 साल पुराना दही

लिबिया के एकेकस पहाड़ों पर जो गुफाएं हैं, उनमें दुधारु पशुओं के चित्र मिले हैं। ये चित्र 5000-8000 वर्ष पुराने हैं और इनसे अंदाज़ा लगता है कि यहां के लोगों के जीवन में दुधारु पशुओं का काफी महत्त्व था। यहां तक कि कुछ चित्रों में तो पशु को दुहते हुए भी दिखाया गया है।

सामान्यतः माना जाता है कि वयस्क मनुष्यों में दूध पचाने की क्षमता कम होते-होते पूरी तरह समाप्त हो जाती है। इसका कारण यह है कि दूध में उपस्थित लैक्टोस शर्करा को वयस्क इंसान नहीं पचा पाते। मगर ब्रिस्टल विश्वविद्यालय के रिचर्ड एवरशेड और पुरातत्त्ववेत्ता जूली डुने के अध्ययन से पता चला है कि उत्तरी अफ्रीका में लैक्टोस सहनशीलता काफी पहले विकसित होने लगी थी। और तो और, वहां के लोग दही बनाने लगे थे ताकि लैक्टोस की मात्रा कम की जा सके।

वैसे तो दुधारु पशु पालन के प्रमाण 9000 वर्ष पूर्व से मिलने लगे थे मगर यह स्पष्ट नहीं हो पाया था कि इन पशुओं को दूध के लिए पाला जाता था या मांस के लिए। मगर ताज़ा अध्ययन में शोधकर्ताओं ने उन गुफाओं में मिले बर्तन के टुकड़ों का विश्लेषण किया। उन पर जो वसा के अवशेष पाए गए उनसे पता चलता है कि यह वसा दही की है। लिबिया की टकारकोरी गुफाओं में मिले 81 बर्तनों की जांच मास स्पेक्ट्रोमेट्री नामक तकनीक से की गई थी ताकि जंतु वसाओं की स्पष्ट पहचान की जा सके। कार्बन के समस्थानिकों के अनुपात के विश्लेषण के आधार 29 बर्तनों पर वसा के अवशेष मिले हैं और इनमें से आधे पर यह वसा दूध से बने उत्पादों की है। कार्बन समस्थानिक विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि ये दुधारु पशु तमाम किस्म की वनस्पतियां खाते होंगे।

यह शोध एक ओर तो यह बताता है कि डेयरी उत्पादन का काम कम से कम 7000 साल पहले शुरू हुआ था और लगभग उसी समय मनुष्य ने दही बनाना भी सीख लिया था। दूसरी बात यह पता चलती है कि मनुष्यों में दूध की लैक्टोस शर्करा को सहने से सम्बंधित जिनेटिक उत्परिवर्तन भी लगभग इसी समय या इससे पहले अस्तित्व में आया होगा। दूध को सहने की क्षमता का उनके जीवन पर खासा असर हुआ होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***